ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 11 अंक 5 सितंबर-अक्टूबर 2019

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की
मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

दृष्टिकोण

संगठित लोकतन्त्र के सन्दर्भ में एम० एन० राय के विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० श्रवण कुमार यादव 1596
अल्लामा इक़बाल की शायरी: पवित्र किताब कुरान हकीम की आयात के प्रकाश में–डॉ० तसनीम कौसर चिश्ती 1598
समाजशास्त्रीय दृष्टि में वृद्धजन–डॉ० सविता नागर 1602
कमलेश्वर के उपन्यासों में मध्यमवर्ग की सामाजिक स्थिति–सत्यप्रकाश 1608
सन् 1857 ई. के विप्लव के विशेष संदर्भ में तत्कालीन भोपाल नवाब सिकन्दर बेगम की मुख्य भूमिका–पंकज कुमार गुप्ता 1622
भारतीय संवैधानिक व्यवस्था पर राजनीतिक प्रभाव–डॉ० शिव बिहारी पाण्डेय 1627
वर्तमान उपन्यास साहित्य और पूर्वोत्तर भारत–कामना सिंह 1629
जल प्रबंधन एवं सामाजिक सरोकार–डॉ० शीतल मीना 1634
दुष्यन्त की गजलों में राजनीतिक चेतना–सलिल तिवारी 1638
भारत में पुलिस प्रशासन का इतिहास–प्रो० डॉ० उमेश कुमार; धर्मराज मिश्रा 1641
जीवन के यथार्थ को उकेरती फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियाँ–डॉ० पूनम शर्मा 1644
भारत के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका - एक भौगोलिक विश्लेषण–डॉ० आभा शुक्ला 1648
भारत के राज्यों में राष्ट्रपति शासन-356, की राजनीति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अनिल कुमार; डॉ० पाँचू राम मीना 1655
पर्यावरणीय नैतिकता: आवश्यकता व आयाम–डॉ० अनुराधा तिवारी 1660
अलवर जिले की कृषि जलवायुविक मृदा मे कीटनाशक रसायनों के अधिशेष–डॉ० कन्हैया लाल मीना 1665
महात्मा गांधी के आर्थिक दर्शन की समसामयिक प्रासंगिकता–डॉ० गुलाब बाई मीना 1671
भारत में मानव विकास सूचकांक की प्रवृत्तिया–डॉ० रश्मि पाण्डेय 1675
रणनीतिक चिंताओं के साथ: चीन-पाक संबंधों का उजागर–सुबोध मणि त्रिपाठी 1678
भारत में चुनाव सुधार: प्रावधान एवं सुझाव–महेन्द्र प्रताप बॉयला 1681
अथर्ववेद में निहित सतत् विकास की अवधारणा–डॉ० योगिता मकवाना 1685
राजस्थान में परंपरागत वस्त्र रंगाई छपाई–डॉ० लक्ष्मी परेवा 1688
वैश्वीकृत आर्थिक युग में संबंध संतुलन : भारत की नीति एवं विकल्प (भारत के पड़ोसी देशों के विशेष संदर्भ में)–नन्दराम खटीक 1691
श्रीलंका में चीन की रणनीति का भारत पर प्रभाव–डॉ० गुलाब बाई मीना 1696
भारतीय ऊर्जा परिदृश्य: चुनौतियां और संभावनाएं–श्रीमती अंजना 1700
मानव अधिकारों का संवैधानिक पक्ष–डॉ० श्याम किशोर उपाध्याय 1703
भारत में जैविक कृषि की ओर बढ़ता रुझान–आसीन खाँ; एन राजेन्द्र सिंह 1709
प्राचीन भारतीय इतिहास में बौद्धयुगीन कला, संस्कृति एवं सभ्यता–प्रभु दयाल जयंत 1713
समावेशी शिक्षा: वर्तमान समय में आवश्यकता और महत्व–डॉ० हरजिंदर कौर 1719
मानवाधिकार और शिक्षा: एक सैद्धांतिक विमर्श–अजय कुमार सिंह 1723
हरियाणा सरकार द्वारा कृषि के आधुनिकीकरण की दिशा में किये गये प्रयास–कृष्ण कुमार 1726
बालमानस पर खेल एवं खेलजगत का प्रभाव–डॉ० हरेंद्रसिंह पी सोलंकी 1729
शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन–राहुल कुमार यादव 1732
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि, अध्ययन आदत तथा समस्या सम्बन्धी अध्ययन–डॉ० शशिकान्त यादव 1736
शहरी क्षेत्रों में कन्या भ्रूण हत्या एक सामाजिक अभिशाप–डॉ0 विजय लक्ष्मी मिश्रा 1740
बालकृष्ण भट्ट के निबंधों में युगीन चेतना–डॉ० विजय कुमार 1743
संस्कृत साहित्यों में प्रकृति निरूपण–डॉ० राजीव कुमार 1746

शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों की छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन

राहुल कुमार यादव

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर

संक्षिप्त सारांश- स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर जो युवक-युवतियाँ शैक्षिक क्षेत्र में आते हैं, उनमें अपार ऊर्जा निहित होती है साथ ही उनमें कुछ कर गुजरने की मनः स्थिति होती है। साथ ही वे अपने जीवन को आकार प्रदान करते हैं, उनकी आकांक्षाएँ बढ़ती हैं तथा उनके समायोजन करने का दायरा बढ़ता है। उनमे सामाजीकरण के दौरान उनमें नेतृत्व का गुण विकसित होने लगता है। नेतृत्व का गुण इस प्रकार का होता है, जो कक्षा से पोषित होकर समाज तक आता है और राष्ट्र की सेवा को तत्पर हो जाता है और स्नातक स्तर पर विद्यार्थी छात्र संघ से परिचित होता है तथा संघ की भावना का विकास होता है उनमें टीम की भावना पोषित होती है और वे भारतीय मूल्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं। स्नातक स्तर पर शिक्षा, विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार व सामाजिक सम्पर्क करने की भावना प्रदान करती है, जिससे वे अपने समाज व राष्ट्र का संरक्षण करते हैं। जिससे उनमें राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर समझ विकसित होती है।

मुख्य शब्दः- उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति, मानकीकृत मापनी, अभिवृत्ति, मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, CR मूल्य इत्यादि।

प्रस्तावना-

परिवार एक आधारभूत संस्था है, इसे जीवन की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। बालक के व्यक्तित्व का विकास वंशानुगत संस्कारों तथा पर्यावरण से क्रिया प्रतिक्रिया करते हुए धीरे-धीरे होता है। परिवार का व्यक्ति के शैक्षिक, बौद्धिक, व्यावसायिक, सामाजिक आदि सभी प्रकार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व, अभिभावकों द्वारा ही बालकों में अनेकानेक संस्कारों एवं शिक्षा का समावेश होता है। विद्यालयी शिक्षा प्रारम्भ हो जाने के पश्चात् भी बालक के शैक्षिक विकास एवं ज्ञान का विकास अधिकांशतः पारिवारिक परिवेश में ही प्रोन्नत होता है। इसलिये शिक्षा का प्रभाव अवश्यंभावी है।

छात्राओं की उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में प्रायः देखा जाता है कि शिक्षित अभिभावकों का छात्राओं की शिक्षा के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। वे अपनी बेटियों में सृजनात्मकता के गुण देखना पसंद करते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित अभिभावक अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा का महत्व न समझ पाने के कारण उन्हें उच्च शिक्षा से दूर कर देते हैं।

उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में एक विशेष बात यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त उसका संख्यात्मक विकास त्वरित गति से हुआ है। साथ ही दूसरी विशेष बात यह है कि उसका संख्यात्मक विकास आदि से अन्त तक अनियोजित रहा है। परिणामतः शिक्षा का गुणात्मक स्तर गिर गया है तथा छात्राओं में ज्ञानार्जन की अभिलाषा कम हो गयी है। शिक्षित व्यक्तियों के समक्ष बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है और इस प्रकार की शिक्षा देश की वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ हो गई है। शिक्षा ही वह साधन है, जो असन्तोषजनक एवं भयप्रद समस्या का समाधान कर सकती है।

भारत में अधिकांश अभिभावकों को इस बात का ज्ञान नहीं है कि उच्च शिक्षा क्या है और छात्राओं के लिये उसकी क्या उपयोगिता है। उनकी इस अज्ञानता का कारण है भारत में अशिक्षा की व्यापकता। 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश के 25% से अधिक व्यक्ति निरक्षर है।

अशिक्षित होने के कारण ही अभिभावकों का ध्यान नव प्रचलित उच्च शिक्षा की ओर न जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यदि उन्हें किसी प्रकार पता चल भी जाता है, तो वे इसे महत्व प्रदान नहीं करते हैं।

अध्ययन का औचित्य-

किसी भी देश का वास्तव में विकास तभी सम्भव है, जब वहां की सम्पूर्ण आबादी का उसमें योगदान हो। भारत में जब आधी आबादी के हिस्से को शिक्षा ही पूर्ण नहीं है, तो फिर किस प्रकार वे देश की उन्नति में योगदान दे सकती हैं। विकास कार्यों में और देश की उत्पादकता में महिलाओं की भागीदारी अपरिहार्य है। इनके विकास की सम्पूर्ण क्षमता का इस्तेमाल करने के लिए जरूरी है कि वे साक्षर हों और वास्तविक रूप से शिक्षित हों, और ये अभिभावकों के माध्यम से ही सम्भव है।

आधुनिक युग में महिला शिक्षा का अत्यधिक महत्व है लेकिन फिर भी हमारे देश में महिला शिक्षा की स्थिति बेहद खराब है। भारतीय महिलाओं के बीच शिक्षा के बेहद अभाव के कारण वे लगातार हर क्षेत्र में पिछड़ती जा रही हैं। शिक्षा के बिना न तो महिला जागरूक हो सकती है और न ही सशक्त।

क्षेत्र सशक्तीकरण के लिये हमारे यहाँ काफी प्रयास किये जा रहे हैं, लेकिन वास्तविकता क्या है? यह हम सभी जानते हैं। सवाल यह है कि क्यों वे समाज और राजनीति में अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बना पा रही हैं? महानगरों में महिलाओं की स्थिति को देख कर लगता है कि महिलाएँ बेहतर स्थिति में आ रही हैं लेकिन यह पूरा सच नहीं है। वास्तव में आम महिलाओं के लिए सशक्तीकरण आज भी दूर की कौड़ी ही है। दूर दराज के ग्रामीण इलाकों की महिलाओं की स्थिति तो और भी खराब है। महिलाओं की इस बदहाल स्थिति का बस एक ही कारण है, शिक्षा की कमी और जागरूकता में कमी।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व-

यह सही है कि किसी समय भारतीय समाज के चिन्तन का आधार "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" रहा है। लेकिन पिछले सैकडों सालों से समाज में रूढ़िवादी परम्पराओं, मान्यताओं और अंधविश्वासों का वर्चस्व रहा है। ऐसे वातावरण में महिलाओं का उत्पीड़न, शोषण और उपेक्षा चरम सीमा पर रही है। यह सही है कि समय के साथ सब कुछ बदल जाता है और बदलाव की यह हवा महिलाओं को भी प्रभावित कर रही है। वर्तमान में महिलाएँ साक्षर होकर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सक्रियता व जागरुकता से स्वयं को, अपने परिवार को समाज को और राष्ट्र को नवीन आयाम प्रदान करने की दिशा में प्रवृत्त हो रही हैं।

भारत में विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रणालियों के आगमन के पश्चात् स्त्री शिक्षा सभी स्त्रियों तक पहुँच सके, इसके लिये भारत सरकार और राज्य सरकारों ने अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाये। परन्तु आज भी समाज में हर तरफ स्त्रियों की सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक-शैक्षिक सुरक्षा इत्यादि के बीच इनके अधिकारों के मध्य अनेक प्रकार से विडम्बनाएँ उत्पन्न हो गयी हैं। जिसके कारण स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त करना मुश्किल हो गया है। आज समय की माँग है कि अभिभावक चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित, अपनी बेटियों की शिक्षा के प्रति सजग दृष्टिकोण अपनाये। वे उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के समुचित अवसर प्रदान करें। छात्राएँ जितनी शिक्षित होंगी, परिवार उतना ही सजग व सशक्त होगा। कहते हैं जब एक लड़की शिक्षित होती है, तो एक परिवार शिक्षित होता है।

अत: शोधकर्ता यही जानने का प्रयास करेगा कि शिक्षित-अशिक्षित अभिभावकों में छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति किस प्रकार की मनोवृत्ति होती है।

अध्ययन का उद्देश्य- प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया जायेगा।

- शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- लिंग भेद के आधार पर शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का अध्ययन करना।
- निवास क्षेत्र के आधार पर शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ- प्रस्तावित अध्ययन में उद्देश्यों की पूर्ति के लिये निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जायेगा।

- शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर उच्च शिक्षा की मनोवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का लिंग भेद के आधार पर उच्च शिक्षा की मनोवृत्ति के प्रति सार्थक अन्तर नहीं है।
- निवास क्षेत्र के आधार पर शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का अपनी छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान अभिकल्प- प्रस्तुत अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोधकार्य की समष्टि जौनपुर के शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों की छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना होगा। शोधकर्ता द्वारा जौनपुर जनपद के 50 शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों को सम्मिलित किया जायेगा। शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक विधि की लॉटरी पद्धति द्वारा जौनपुर जनपद की तीन तहसीलों का चयन किया जायेगा। शोधकर्ता द्वारा शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करने के लिये स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में टी-परीक्षण तथा आघूर्ण सहसम्बन्धात्मक परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका संख्या-1 प्रथम उद्देश्य के विश्लेषण और व्याख्या के लिए निम्नलिखित आँकड़ों को तालिका स्वरुप प्रदान किया गया है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	t मान
अशिक्षित अभिभावक	18	290.75	22.98	9.84	16.92 अस्वीकृत
शिक्षित अभिभावक	32	457.25	12.36		

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अशिक्षित अभिभावकों के पारिवारिक पृष्ठभूमि का मध्यमान 290.75 है और उनका मानक विचलन 22.98 तथा शिक्षित अभिभावकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का मध्यमान 457.25 तथा मानक विचलन 12.36 है। शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि के तुलनात्मक अध्ययन के लिये ज्ञात की गयी मानक त्रुटि 9.84 है। इसका t मूल्य 16.92 आया है, जो यह प्रदर्शित करता है कि df 16 सार्थकता स्तर 0.01 के t मान 2.98 से अधिक है। जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है और यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि में अन्तर पाया जाता है।

तालिका संख्या-2 द्वितीय उद्देश्य के विश्लेषण और व्याख्या के लिए निम्नलिखित आँकड़ों को तालिका स्वरुप प्रदान किया गया है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	t मान
अशिक्षित अभिभावक	32	382.8	22.20	9.46	9.73 अस्वीकृत
शिक्षित अभिभावक	18	290.75	22.48		

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करें, तो हमें ज्ञात होता है, कि शिक्षित अभिभावकों की कुल संख्या 32 है जिसका मध्यमान 382.8 और मानक विचलन 22.20 व अशिक्षित अभिभावकों का मध्यमान 290.75 और मानक विचलन 22.48 है।

स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों में लिंग के आधार पर उच्च शिक्षा की मनोवृत्ति के प्रति सार्थक अन्तर है। शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों के तुलनात्मक अध्ययन के लिये ज्ञात किया गया मानक त्रुटि का मान 9.46 और परिकल्पना की सार्थकता जाँचने हेतु परिकलित किया गया t का मान = 12.38 है। 73 है। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह परिणाम प्राप्त होता है कि शिक्षित अभिभावक अपनी छात्राओं के शिक्षा के प्रति अत्यधिक चिंतनशील है। वे अपनी बच्चियों में वर्तमान के प्रति अपार सम्भावनाएं देख रहे है।

तालिका संख्या-3 तृतीय उद्देश्य के विश्लेषण और व्याख्या के लिए निम्नलिखित आँकड़ों को तालिका स्वरुप प्रदान किया गया है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	t मान
शिक्षित अभिभावक	32	457.25	12.36	6.01	12.38 अस्वीकृत
अशिक्षित अभिभावक	18	382.5	22.20		

प्रस्तुत आँकड़ों का विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होता है, कि शिक्षित अभिभावकों की कुल संख्या 32 है। इनके प्राप्तांक का मध्यमान 457.25 और मानक विचलन 12.36 है। वहीं दूसरे समूह की कुल संख्या 18 है और जिसका मध्यमान 382.5 तथा मानक विचलन 22.20 है। शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों के तुलनात्मक अध्ययन हेतु ज्ञात की गयी मानक त्रुटि का मान 6.01 व परिकल्पना की सार्थकता जाँचने हेतु परिकलित किया गया t का मान = 12.38 है। उपरोक्त आँकड़ों में प्राप्त ज का मान 12.38 है, जो कि df 40 के सार्थकता स्तर 0.01 का ज मान = 2.71 से अधिक है। यह स्थिति सूचित करती है कि शोधकर्ता द्वारा बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है क्योंकि t का मान 12.38 df = 40 के सार्थकता स्तर 0.01 के ज मान 2.71 से अधिक है।

शिक्षा वह ज्ञान रुपी कुंज है, जो मानव को सामाजिक प्राणी बनाने का कार्य करती है। यह मानव के जीवन में आये हुए अंधकार रुपी कष्टों को दूर करने का कार्य करती है। आज अभिभावक शिक्षित हो या अशिक्षित वे अपनी छात्राओं के भविष्य के प्रति सचेत व सजग रहते हैं।

निष्कर्षः- प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

- अशिक्षित अभिभावकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षित अभिभावकों की पृष्ठभूमि से निम्न प्रतीत होता है। इस परिणाम के सम्भवतः कई कारण हो सकते हैं।
- प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह परिणाम प्राप्त होता है कि शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों का लिंग के आधार पर मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
- निवास क्षेत्र के आधार पर शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों की मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थः- हमारा इतिहास उच्च शिक्षा में बहुत ही प्रतिष्ठित रहा है। उच्च शिक्षा देने वाले भारतीय गुरुकुलों की बड़ी विशेषता रही है कि उनमें प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा सुदृढ़ शिक्षात्मक प्रणाली से दी जाती थी। सबसे ऊपर के छात्र अपने नीचे वाले छात्रों का ध्यान रखते थे, ऐसे में सहयोग भावना का विकास होता था और उनमें परिवार का प्रत्यय प्रस्फुटित होता था। ऐसे में राष्ट्रीय एकता व अखंडता को बल मिलता था। सामान्य रुप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विषय विशेष का गूढ़ ज्ञान देना ही उच्च शिक्षा कहा गया। कालान्तर में यह शिक्षा विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक महाविद्यालयों और सामुदायिक विद्यालयों के नाम से जाना जाता था। लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा भी उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है। प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ डाक्टोरल शिक्षा प्रदान की जाती है। ऐसे ही उच्च शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता रहा है। इस तरह उच्च शिक्षा का स्वरुप विस्तीर्ण होता हुआ भारत वर्ष में प्रतिष्ठित हुआ था। उच्च शिक्षा देने वाले भारतीय गुरुकुलों की बड़ी विशेषता यह थी कि उनकी प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा को नायकत्व प्रणाली से दी जाती थी। सबसे ऊपर के छात्र अपने नीचे की कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाते थे और वे अपने से नीचे वालों को, इसी प्रकार शैक्षिक कार्य संचालित होता था। यद्यपि ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य के पुत्र ही प्रवेशित किये जाते थे और वर्णों के अनुकूल ही शिक्षा दी जाती थी। तथापि नित्यधर्म, स्वच्छ, शील व शिष्टाचार